एड्स (AIDS) का दानवः सावधान मानव

दीपिका सैनी
एम.एस.सी. (जन्तु विज्ञान), मेहवड़ कलां, रूडकी

प्रत्येक वर्ष 1 दिसम्बर को विश्व एड्स दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस दिन एड्स के प्रति लोगों को सजग करने के लिए अनेक नीतियाँ एवं योजनाएं बनायी जाती हैं। आज एड्स एक भयानक बीमारी के रूप में प्रत्येक देश में फैल चुका है। प्रत्येक वर्ष अनगिनत लोग इस लाइलाज बीमारी का शिकार होते हैं। आज हर एक आदमी एड्स का नाम सुनते ही अन्दर से काँप उठता है। आखिर क्या है एड्स? कैसे ये बीमारी मनुष्य को जकड़ कर दर्दनाक मौत के मुंह में ले जाती है? वैज्ञानिक क्यों एड्स का इलाज नहीं खोज पा रहे हैं? इस प्रकार के अनगिनत प्रश्न मनुष्य को परेशान करते रहते हैं। इन्ही सब प्रश्नों के कारण आज आवश्यक हो गया है कि एड्स का हर पहलू आम जन मानस के सामने स्पष्ट हो।

एड्स क्या है?

एड्स अभति एक्वायर्ड इम्यूनो डिफिसिएंसी सिन्ड्रोम एक वाइरस होता है, जिसका नाम एच.आई.वी. होता है। एच.आई.वी. का पूरा नाम ह्यूमन इम्यूनो डिफिसिएंसी वायरस है। एड्स को सबसे पहले जून 1981 में लॉस एन्जैलेस मे समलिंगी पुरूषों से पहचाना गया था,जो कि एक दुर्लभ प्रकार के निमोनिया से पीड़ित थे। प्रारंभ से माना जाता था कि एड्स केवल समलिंगी पुरूषों को ही होने वाली बीमारी है। परन्तु अब ये स्पष्ट हो चुका है कि उनके अलावा वैश्यागमन करने वाले पुरूष, वैश्याएं, घरेलू स्त्रियाँ, प्रौढ़, वृद्ध यहाँ तक कि नन्हें बच्चे भी एड्स का शिकार हो सकते हैं।

एच.आई.वी. वायरस रक्त की श्वेत कोशिकाओं को तेजी से नष्ट करके ऐसी स्थिति पैदा कर देते हैं कि उस व्यक्ति की रोगों से लड़ने की क्षमता नष्ट हो जाती है।

कैसे फैलता है एड्स?

- नशा करने वाले लोग आमतौर पर समूह में बैठकर ही सुई का प्रयोग बारी-बारी करते हैं। यदि उनमें से कोई एड्स से ग्रसित हो तो सुई के माध्यम से एड्स के वाइरस अन्य लोगों के शरीर में भी चले जाते हैं। कई बीमारियों या आपरेशनों में भी रक्त की आवश्यकता होती है। ऐसे में किसी एड्स रोग से ग्रस्त व्यक्ति का रक्त देने पर वह मरीज भी एड्स ग्रस्त हो सकता है। एड्स वायरस से संक्रमित व्यक्ति द्वारा प्रयोग किये ब्लेड से दाढ़ी बनाने पर भी अन्य लोगों में एड्स फैल सकता है।
- एड्स के फैलने का सबसे अहम पहलू है-शारीरिक सम्बन्ध। जब एड्स से ग्रसित स्त्री या पुरूष किसी स्वस्थ स्त्री या पुरूष से शारीरिक सम्बन्ध स्थापित करते हैं तो एड्स के फैलाव को बढ़ावा मिलता है।
- यदि एड्स से ग्रसित स्त्री गर्भवती हो तो उससे होने वाले बच्चे में एड्स होने की संभावना कई गुना बढ़ जाती है। कुल मिलाकर एड्स वाइरस रक्त वीर्य इत्यादि द्वारा ही एक से दूसरे तथा तीसरे व्यक्ति तक फैलता है और अधिकतर मेलों में जैसे शरीर पर गोदवाने की प्रथा, कान, नाक छिदवाना आदि प्रक्रियाओं में

भी यदि रोगाणुयुक्त उपकरणों का प्रयोग किया जाए तो भी एड्स ग्रस्त स्त्री से स्वस्थ स्त्रियों में एड्स वाइरस का संक्रमण हो सकता है।

एड्स के लक्षण:

एड्स वाइरस शरीर में पहुँचने के बाद चार-पॉच साल तक मनुष्य की रोगो के प्रति लड़ने की शक्ति को खत्म कर देता है। एड्स के बारे में रोगी को पता भी नहीं चलता कि वह एड्स रोगी है। इन लक्षणों के विभिन्न प्रकारों में लगातार बुखार रहना, पतले दस्त, रात में पसीना, मुँह में छाले, शरीर का वजन लगातार गिरना,थकना तथा ऑखों के सामने अंधेरा छा जाना आदि प्रमुख हैं । रोगी के रोग से लड़ने की क्षमता खत्म हो जाती है। इसलिए दस्त, बुखार, पीलिया, संक्रमण, खांसी, सिरदर्द,टी.बी. जैसे रोगो हो जाते हैं।

एड्स से बचाव के उपाय:

- एड्स से बचने का सबसे महत्वपूर्ण उपाय है सुरक्षित यौन संबंध तथा एक से अधिक साथियों के साथ यौन संबंध न रखना।
- इंजेक्शन के लिये हमेशा डिस्पोसेबल सिरिंजों का उपयोग करें।
- रक्तदाता को पहले यह पता होना आवश्यक है कि कहीं वह एच.आई.वी. संक्रमित तो नहीं है। गर्भ में पलने वाले शिशु की माँ को यदि एड्स हो तो समय पर बच्चे और माँ का इलाज करायें।

एड्स तथा औषधियॉ

यह सत्य है कि एड्स एक ला-इलाज बीमारी है परन्तु मनुष्य हमेशा संघर्ष करता आ रहा है। संपूर्ण विश्व के वैज्ञानिक इसकी सटीक दवाई खोजने में जुटे हैं। फिलहाल जो औषधियॉ खोजी गई हैं वे शरीर में एड्स की वृद्धि को धीमी करती हैं। प्रमुख दवाईयॉ ए2, टी 3 टेट्राहाइड्रो बेजोडाइ जो पाप नोन, डीआक्सीनो–जोरीमायसीन आदि हैं ।

*****